www.ved-yog.com

सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः॥ (योग० २.१३) के ऊपर भाष्य लिखते हुए महर्षि व्यास कहते हैं कि :- **तद्विपाकस्यैव देशकालनिमित्तानवधारणादिये कर्मगतिश्चित्रा दुर्विज्ञाना चेति॥**

महर्षि पतञ्जलि जी का कहना है कि (सतिमूले) अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश इन पाँच मूल कारणों के होने पर (तद्विपाकः) उनके कर्माशयों का फल (जात्यायुर्भोगाः) जाति, आयु, भोग ये तीन जीवात्मा को परमेश्वर की व्यवस्था से मिलता है।

इस विषय में महर्षि व्यास कहते हैं कि (तद्विपाकस्यैव) जीवात्मा के द्वारा किये गये कर्माशय के विपाक = फल = जाति, आयु, भोग के (देशकालनिमित्तानवधारणात्) देश, काल, निमित्त के निश्चयात्मक ज्ञान के अभाव में (कर्मगतिः) कर्मफल प्रदान करने के सिद्धान्त की पद्धति अल्पज्ञ जीवात्मा के लिए (चित्रा) विचित्र अर्थात् आश्चर्यजनक है, (दुर्विज्ञाना चेति) और दुर्बोध्य अर्थात् बहुत ही कठिनाई से कुछ जानने-समझने योग्य है। क्योंकि कोई अल्पज्ञ जीव चाहे कितना ही ज्ञान का उपार्जन क्यों न कर लेवे, किन्तु जाति, आयु, भोग के देश, काल, निमित्त को पूर्णरूप से कभी नहीं जान सकता। अतः कर्मफल की व्यवस्था के सिद्धान्त का पूर्णरूप से निर्णय करना जीवात्मा के सामर्थ्य से बाहर है। इसीलिये यह सिद्धान्त जीवात्मा के लिए विचित्र और दुर्बोध्य है।

परमेश्वर सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक है। अतः वह सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ होने से वह सभी जीवों के जाति, आयु, भोग के देश, काल, निमित्त को यथावत् पूर्णरूप से जानता है। अतः सर्वज्ञ परमेश्वर ही कर्मफल की सही-सही व्यवस्था कर सकता है। किसी दूसरे में इतना सामर्थ्य नहीं है।

इस कर्मफल सिद्धान्त के ऊपर बहुत प्रकार से चिन्तन, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार करने के पश्चात् भी महर्षि व्यास पूर्णरूप से जानने की अवस्था को प्राप्त नहीं कर सके। अतः अनिश्चितता से युक्त अनिर्णय की स्थिति में "चित्रा व दुर्विज्ञाना" कहकर पृथक् हो गये। यदि निर्णयात्मक रूप से इस विषय पर कुछ कह देते तो शायद वह असत्य व सिद्धान्तविरुद्ध हो जाता। इतने मात्र से यह स्पष्ट है कि महर्षि लोग कितना सावधान रहते थे।

महर्षि व्यास के बाद इस विषय पर अनेक मनुष्यों एवं विद्वानों ने अपनी मान्यता के अनुसार लिखने का प्रयास किया। वे लोग अपने आप को ऋषियों तथा ईश्वर से भी ज्यादा ज्ञानवान् मानकर ढोंग-पाखण्ड, अन्धविश्वास व भ्रान्ति से युक्त बहुत कुछ लिख गए। जिसके कारण से जन-साधारण में यह उलझा हुआ विषय और भी अधिक उलझ गया। इस उलझे हुए विषय पर लेखनी उठाना पहाड़ खोदने से कम नहीं है।

इस विषय पर प्रस्तुत ग्रन्थ के लेखक श्री सतीश आर्य जी का विभिन्न विद्वानों से

www.ved-yog.com

वर्षों तक परस्पर प्रश्नोत्तर, शंका-समाधान, चिन्तन-मनन लगातार चलता रहा है। निरन्तर तथा दीर्घकाल तक विचार-विमर्श के पश्चात् इस विषय में जो कुछ वैदिक सिद्धान्त के अनुरूप समझ में आया व निश्चियात्मक ज्ञान हुआ, वह सभी लेखक ने इस ग्रन्थ में आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। इस ग्रन्थ को लिखनें में श्री सतीश आर्य ने लगातार कई वर्ष लगाये। लिखते-लिखते अनेकों बार कई जटिल विषय आये। जिन पर वैदिक साहित्य से प्रमाण प्रस्तुत कर सप्रमाण समाधान प्रस्तुत किया गया। इन जटिल विषयों पर भी परस्पर शंका-समाधान किया जाता रहा। पुनरपि अनेक विषय अनिर्णीत अवस्था में छोड़ दिये गये। उन्हें छोड़ देना ही उचित समझा गया। क्योंकि साक्षात्कृत धर्मा महर्षि व्यास के निर्णय के समझ कोई मनुष्य क्या साहस कर सकता है।

कम्प्यूटर द्वारा कम्पोजिंग होने के पश्चात् आदि से अन्त तक इस ग्रन्थ को बड़े मनोयोग से देखा। इसमें ढोंग-पाखण्ड, अन्धविश्वास, भ्रान्ति से युक्त कुछ भी नहीं है। वरन् इस विषय पर अनेकों भ्रान्तियों तथा अन्धविश्वासों का सप्रमाण तथा सतर्क निराकरण किया गया है। इसका स्वाध्याय करने पर आप भी अनुभव करेंगे कि इसमें वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध कुछ भी नहीं है।

इस ग्रन्थ में कई अध्याय सर्वथा मौलिक हैं। इनमें से "मानवीय कर्मफल व्यवस्था" अध्याय ३, "भोग" अध्याय-६, "मानवीय कर्म विवेचन" अध्याय १५, "मानवीय और ईश्वरीय व्यवस्था में अन्तर" अध्याय १८ तथा "शंका-समाधान" अध्याय २२ मुख्य हैं। इसी प्रकार अनेक विषयों का प्रस्तुतीकरण भी नए ढंग से किया गया है, जो अपने-आप में नयापन लिए हुए है।

लेखक को प्रयास स्तुत्य है। बैंक में कार्यरत रहते हुए, एक गृहस्थ का भार वहन करते हुए, सामाजिक कार्यों में भी व्यस्त रहते हुए, तथा वैदिक ग्रन्थों के अध्ययन में संलग्न होते हुए इतना विस्तृत ग्रन्थ लिखने का समय कैसे निकाला ? इनमें इतनी शक्ति का सञ्चार कहाँ से हुआ ? इस विषय में मैं इतना ही कहूँगा कि इन पर प्रभु की बड़ी कृपा है, जिससे से ये इतना कुछ कर पा सके हैं। आगे इनके लिये दीर्घायु, पूर्णस्वस्थता तथा धन-धान्य से परिपूर्णता की कामना है। ओम् शम्।

आचार्य भद्रकाम वर्णी
संचालक, वेद प्रचार निधि (पं०)
आर्य समाज मिन्टो रोड, नई दिल्ली - ११०००२

— oooo —